॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

अप्रैल 2019 वर्ष 23, अंक 4 ❑ दूरभाष (दिल्ली) : 23360059, 23362110 (टंकारा) : 02822-287756 ❑ विक्रमी सम्वत् 2075-76
ई-मेल : tankarasamachar@gmail.com ❑ एक प्रति का मूल्य 10/-रुपये वार्षिक शुल्क 100 रुपये ❑ कुल पृष्ठ 20

पदम्श्री आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी जी के आशीर्वाद एवम् सहयोग से

टंकारा बोधोत्सव सफलतापूर्वक सम्पन्न

टंकारा आर्यो की प्रेरणा स्थली- डॉ. महावीर अग्रवाल (उपकुलपति पतंजलि विश्वविद्यालय)

टंकारा जन्मभूमि की मिट्टी को नमन कर कृतार्थ हुआ- डॉ. रमेश आर्य (उपप्रधान डी.ए.वी.)

हमें विश्वस्तर के बहुभाषी उपदेशकों को तैयार करना होगा श्री सुरेश आर्य (प्रधान सार्वदेशिक सभा)

दिनांक 26 फरवरी से 04 मार्च 2019 तक का सम्पूर्ण ऋषि बोधोत्सव पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी जी की अध्यक्षता में उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। ऋग्वेद पारायण यज्ञ 26 फरवरी से टंकारा स्थित उपदेशक विद्यालय के आचार्य रामदेव जी के ब्रह्मत्व में प्रारम्भ हुआ। मुख्य यजमान डॉ. रमेश आर्य, उपपप्रधान, डी.ए.वी कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति, मुंजाल परिवार एवम् श्री योगेश मुंजाल, श्री सुधीर मुंजाल, श्री लधाभाई पटेल आदि थे। पूरे सप्ताह आर्य जगत् के प्रसिद्ध गायक एवं भजनोपदेशक श्री सत्यपाल पथिक (अमृतसर) एवं श्री जगत वर्मा (जालन्धर) के मधुर भजन प्रातः एवं सायं होते रहे।

मंचासीन श्री जयदेव भाई (राजकोट) श्री योगेश मुंजाल (ट्रस्टी), डॉ. रमेश आर्य (उपप्रधान डी.ए.वी.) श्री सुरेश आर्य (प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा), डॉ. अविनाश भट्ट (ट्रस्टी), श्रीमती भानु बेन (भुज) डॉ. महावीर अग्रवाल (उपकुलपति पतंजलि विश्वविद्यालय)

02 मार्च 2019 को रात्रि 8 बजे से 10 बजे तक उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारियों द्वारा कार्यक्रम प्रस्तुत किए जिसमें भजन, कव्वाली, भाषण, लघु नाटिका इत्यादि सम्मिलित थे। इस सत्र की अध्यक्षता श्री अजय सहगल ने की और मुख्य अतिथि के रूप में श्री लधाभाई पटेल उपस्थित थे। विशेष आमन्त्रित के रूप में श्री रमेश मेहता (पूर्व स्नातक) ने सबकी उपस्थिति में अपार जन समूह व ब्रह्मचारियों की सराहना की।

श्री सुधीर मुंजाल (ट्रस्टी), श्री लद्धा भाई (ट्रस्टी), श्री योगेश मुंजाल (ट्रस्टी), डॉ. रमेश आर्य, श्री सुरेश आर्य, श्री अजय टंकारावाला, श्री अविनाश भट्ट टंकारा ऋषि बोधांक का लोकार्पण करते हुए।

दिनांक 02 मार्च 2019 से प्रतिदिन प्रातः 5 बजे से 6 बजे तक योग एवं स्वास्थ्य सत्र स्वामी शान्तानन्द जी (भुज) के नेतृत्व में चलाया गया, तदुपरान्त प्रातः 6 बजे से प्रभात फेरी निकाली गई जिसमें भारत भर के ऋषि भक्तों ने बड़े उत्साह से भाग लिया।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

टंकारा समाचार की ओर से भारतीय नववर्ष 2076 की हार्दिक शुभकामनाएं।

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा

आपके नेतृत्व एवम् आर्शीवाद से दिन-प्रतिदिन प्रगति के पथ पर

पारिवारिक कर्त्तव्यों का कोई मोल-तोल नहीं

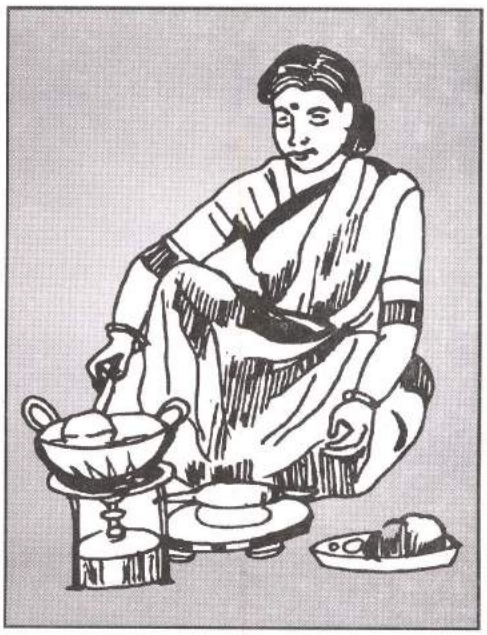

भारतीय पारिवारिक व्यवस्था में महिला और पुरुष की अपनी-अपनी भूमिकाएँ हैं। दोनों के अपने-अपने कर्तव्य, अधिकार और मर्यादाएँ हैं। मर्यादा-निर्धारण, दायित्व-वर्गीकरण और श्रम-विभाजन से भारतीय परिवार संस्था पूरी दुनिया के लिए आदर्श बनी हुई है। परिवार के सुदृढ़ होने से समाज अखण्ड बना रहता है और देश विकास की राह पर आगे बढ़ता है।

मौजूदा माहौल में कुछ लोग यह सवाल उठाते हैं कि गृहिणियों के घरेलू काम को महत्ता क्यों नहीं मिलती है। इस सवाल का एक ही दृष्टि से उत्तर नहीं दिया जा सकता है। भारत में गृहिणियों को 'अन्नपूर्ण' और 'गृहलक्ष्मी' जैसी आदर्श उपमाएँ उनके और उनके काम के प्रति सम्मान दर्शाया गया है। शिक्षित, संस्कारित और कार्यदक्ष गृहिणियाँ कई रूपों में 'गृह-सरस्वती की भूमिका भी निभाती हैं।

कुशल गृहिणी 'अन्नपूर्णा' के रूप में अपने हाथ से रसोई बनाती है। घर की अनेक प्रकार की खाने-पीने की चीजें शुद्धता से वह तैयार करती है। ऐसी गृहिणी के रसोई-घर या चौके में बाजार की गैर-जरूरी पैक्ड खाद्य वस्तुएँ अपना अड्डा नहीं जमाती हैं। फलस्वरूप ऐसे घर के सदस्यों के शरीर में नित नई बीमारियाँ नहीं आती हैं। घर में तैयार आहार शारीरिक ही नहीं, बौद्धिक और भावनात्मक दृष्टि से भी अधिक लाभकारी होता है।

निम्न-मध्यवर्गीय भारतीय ग्रामिण परिवार की दृष्टि से कहा जाए तो सुबह सबसे पहले उठने वाली और रात को सबके बाद सोने वाली गृहिणी अनाज भी पीसती है और स्वयं भी पिसती है। यानी ढेर सारे घर के कार्मो में वह खुद का भी ख्याल नहीं रख पाती है। लेकिन अमूमन अब वैसी स्थिति नहीं है। यह शुभ है कि उपयोगी वैज्ञानिक आविष्कार और शिक्षा ऐसी स्थितियों में क्रांतिकारी सकारात्मक परिवर्तन हैं। फलस्वरूप आज गृहिणियों के अनेक घरेलू सामान हो गये हैं। आज गैस चुल्हा, कपड़ा धोने की मशीन, कुकर, वैकुम सफाई मशीन, आई आधुनिक अविष्कार माँ गृहिणी , बहन की दिनचर्या, में सहायक सिद्ध हुई है। उनके कामकाज की महत्ता समझी जा रही है-घर के भीतर भी और घर के बाहर भी।

इधर, आज हर चीज का व्यापारीकरण हो गया है। आदमी अपने कर्त्तव्य-पालन, सेवा, साधना, सम्बन्ध तथा पारिवारिक-सामाजिक दायित्वों का भी हद से ज्यादा मोल-तोल करने लगा है। स्मरण रखना चाहिए कि जीवन में अनेक बातें अनमोल होती हैं। हर चीज का धन या भौतिक प्रतिफल से आंकलन करना उचित नहीं है। सुख सिर्फ मुद्रा पर ही अवलम्बित नहीं होता है। पश्चिम के अंधानुकरण और कोरी भौतिकवादी शिक्षा से समाज में अनेक समस्याएँ खड़ी हो गई हैं। इकतरफा स्त्री-विमर्श तथा पारिवारिक मूल्यों और मान-मर्यादाओं को आहत करने वाले न्यायिक निर्णयों से ऐसी समस्याएँ अधिक जटिल हुई हैं।

भारतीय चिन्तन में संसार को परिवार माना गया है, लेकिन संसार भारत को बाजार मानता है। दृष्टि और भावना के इस अन्तर को समझने पर बहुत सारी समस्याएँ हल हो सकती हैं। वे समस्याएँ स्त्री-पुरुष की हों या परिवार की, अथवा समाज की।

यह सच है कि गृहिणी का त्याग अतुलनीय होता है। घर में गृहिणी (गृहस्वामिनी) के द्वारा किया जाने वाला त्याग और परिश्रम ही परिवार को शक्तिशाली, समृद्ध और खुशहाल बनाता है। कुशल गृहस्वामिनी का आलम्बन पाकर गृहस्वामी निश्चित होकर अपने कर्तव्य-पथ पर आगे बढ़ता है। इसी प्रकार स्नेहिल व सुयोग्य गृहस्वामी का सम्बल पाकर गृहस्वामिनी अपने परिवार की प्रतिष्ठा में चार चाँद लगा देती है। ऐसे परिवार का हर सदस्य, चाहे वह महिला हो या पुरुष, अपनी अनुकूल पारिवारिक पृष्ठभूमि के कारण स्वभावतः रचनात्मक और परिश्रमी बनता है। वह परिवार, समाज और देश के प्रति अपने दायित्व को समझने वाला होता है। किसी कवि ने कहा है:-

यह ना सोचो कि हमें मिला क्या,
यह भी सोचो कि हमने दिया क्या।

इसी भावना से घर, समाज, प्रदेश और देश उन्नती करता है। परिवार की चहुँमुखी उन्नति में नारी के बुनियादी योगदान की वजह से ही उसे समाज, संस्कृति, परम्परा और कानून के द्वारा अनेक विशेष अधिकार प्राप्त हैं। लेकिन आजकल अधिकारों की चर्चा अधिक हो रही है और कर्त्तव्य की उपेक्षा हो रही है। जहाँ कर्तव्य-पालन में जी-चुराई होती है तथा पारास्पारिक स्नेह, सहयोग व समझ का अभाव होता है, वहाँ प्रगति का पहिया धीमा हो जाता है। ऐसे परिवार के सदस्यों की रचनात्मकता और सकारात्मकता कम हो जाती है। ऐसे परिवार अनेक प्रकार की स्वनिर्मित समस्याओं के दुश्चक्र में फँस जाते हैं। वे समस्याएँ 'कर्म-जनित' नहीं होकर आदमी के अविवेक और आलस्य से उपजी समस्याएँ होती हैं।

धर्म-कर्म को जानने वाले, कुछ लोग स्वनिर्मित समस्याओं के लिए भी अपने पिछले जन्मों के कर्मों को दोषी ठहराते हैं जो कि बिल्कुल गलत भावनाएँ व विचार है।। मनुष्य यदि अपने पुरुषार्थ को प्रखर बनाए, विवेक का दीप प्रज्जवलित रखे और अनावश्यक होड़ा होड़ी से बचे तो उसके जीवन में, घर-आंगन में सुख अठखेलियाँ करने लगेगा। यदि वह प्राप्त सुख को थोड़ा बाँटना भी सीख ले तो अपने सुख को और बड़ा करता रहेगा, बढ़ाता रहेगा।

अजय टंकारावाला

टंकारा ऋषि बोधोत्सव 2019 के चित्रों को देखने और डाऊनलोड करने के लिए इंटरनेट के माध्यम से www.facebook.com/ajaytankarawala पर जायें और लाइक व शेयर अवश्य करें।

मर्यादापुरूषोत्तम श्रीराम

❐ महात्मा चैतन्यस्वामी

आदिकालीन मनु जी के सात पुत्र थे जिनकी एक शाखा में महाराजा सगर, सुखमंजस, विरूत, कद्दीप, भगीरथ, अशुंमान, अनरण्य, नहुष, त्रिशंकु, दिलीप, रघु और अज आदि हुए तथा दूसरी शाखा में सत्यवादी हरिश्चन्द्र आदि। वैवस्वत मनु के बाद इस सूर्यवंश की उनतालीस पीढ़ियों के बाद श्री राम जी ने अयोध्या में राजा दशरथ जी के यहां जन्म लिया। श्रीराम जी के चरित्र में ऐसे उत्कृष्टतम गुण विद्यमान थे जिनके कारण आज लाखों वर्षों के बाद भी उन्हें घर-घर स्मरण किया जाता है। वास्तव में उनके सभी पूर्वजों का भी अपना अत्यधिक आदर्श जीवन था। इस प्रकार श्रीराम में अपने पूर्वजों के ही गुणों का सामुहिक विकास हमें देखने को मिलता है। उनके दिव्य गुणों का प्रमाण हमें महर्षि बाल्मीकि और नारद जी की वार्ता से मिलता है। जब बाल्मीकि जी ने नारद से पूछा कि मुनि राज! इस समय संसार में गुणवान्, धर्मज्ञ, शूरवीर, सत्यवादी, कृतज्ञ और दृढ़ प्रतिज्ञा वाला मनुष्य कौन है? तो महामुनि नारद जी ने ऐसे व्यक्ति के रूप में श्रीराम का ही नाम महर्षि जी के सम्मुख प्रस्तुत किया था तथा नारद जी से यह सुनने के बाद ही उन्होनें श्रीराम पर रामायण महाकाव्य लिखने का निर्णय लिया था। बाल्मीकि जी ने अपने ग्रन्थ में श्रीराम जी को विद्याव्रत स्नातक तथा यथावत् अंगों सहित वेद का जानने वाला कहा है। यही नहीं वे अपने काव्य में श्रीराम के गुणों के बारे में महाराजा दशरथ से केकैयी को कहलवाते हैं-**क्षमा यस्मिंस्तपस्त्यागः सत्यं धर्मकृतज्ञता। अप्यहिंसा च भूतानांतमृते का गतिर्मम्।।** अर्थात् हे केकैयी! जिस राम के अन्दर-क्षमा, तप, त्याग, सत्य, धर्म और कृतज्ञता तथा प्राणियों के लिए दया है, उस राम के बिना मेरी क्या गति होगी? अन्य अनेक स्थानों पर भी बाल्मीकि जी ने श्रीराम जी को मर्यादित, शरणागत, आस्तिक, धार्मिक और निश्चय बुद्धि वाला कहा है।

यूँ तो रामायण में वर्णित प्रत्येक व्यक्तित्व अपने आप में अद्वितीय एवं अतुलनीय है मगर इस महाकाव्य के महानायक श्रीराम जी का आदर्श व्यक्तित्व तो अत्यधिक विलक्षणता से परिपूर्ण है। महाराज दशरथ जी के लिए चारों राजकुमार ही प्रिय थे मगर श्रीराम के प्रति उनका विशेष अनुराग था तथा उस अनुराग का आधार श्रीराम जी का आदर्श व्यक्तित्व ही था। श्रीरामजी के अद्भुत व्यक्तित्व का हमें रामायण में अनेक स्थानों पर परिचय मिलता है। अयोध्या काण्ड में उन्हें ब्रह्मा के समान गुणवान् बताया गया है। अन्य गुणों की चर्चा करते हुए कहा गया है। (अयो.का.1-7) कि श्रीराम अत्यन्त रूपवान्, महाशक्तिशली, दुर्गुणों से रहित, पृथिवी पर अनुपम और गुणों में दशरथ ही के समान थे। इसी क्रम में आगे कहा गया है। (अ.का.1-10, 12) वे सदा प्रसन्नचित रहते और सब से मधुर बोलते थे। यदि कोई उनके प्रति कठोर वचन भी बोलता था तो भी वे प्रत्युत्तर में कोई कठोर बात नहीं कहते थे। श्रीराम किसी प्रकार किए गए एक ही उपकार से सन्तुष्ट हो जाते थे। और किसी ने उनके प्रति सैकड़ों अपकार किए हों तो भी उनका स्मरण नहीं करते थे। वे दयालु, क्रोध को वश में रखनेवाले, ब्राह्मणों का सम्मान करने वाले, दीनों पर दया करने वाले, धर्म को जानने वाले, जितेन्द्रिय एवं पवित्र थे। श्रीराम समस्त विद्याओं और ब्रह्मचर्य-व्रत में स्नान किए हुए अर्थात् विद्यास्नातक और व्रतस्नातक थे। वे अंगों सहित वेदों को जानने वाले और बाण-विद्या में अपने पिताजी से भी बढ़कर थे।

श्रीराम जी को राजा बनाने के पक्ष में अयोध्या की परिषद् ने श्रीराम जी के अनेक गुणों का वर्णन किया है। जिन में से कुछ इस प्रकार विवेचित किए गए हैं। (अ.का.2-19 से 26) सत्यपराक्रमी श्रीराम दिव्य गुणों से इन्द्र के समान हो रहे हैं। अतः वे इक्ष्वाकुवंशी राजाओं में सबसे श्रेष्ठ हैं। सत्यपरायण श्रीराम लोक में वस्तुतःश्रेष्ठ पुरूष हैं। उन्हीं से धर्म और अर्थ को प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है। प्रजा को सुख देने में श्रीराम चन्द्रमा के तुल्य, क्षमा करने में पृथिवी के समान, बुद्धि में बृहस्पति के तुल्य और पराक्रम में साक्षात् इन्द्र के समान हैं। वे धर्मज्ञ, सत्यवादी, शीलयुक्त, ईर्ष्या से रहित, शान्त, दुखियों को सान्तवना देने वाले, मधुर-भाषी, कृतज्ञ और जितेन्द्रिय हैं। मनुष्यों पर कोई आपत्ति आने पर वे स्वयं दुःखी होते हैं और उत्सव के समय पिता की भांति प्रसन्न होते हैं। श्रीराम सदा सत्य बोलने वाले, महाधनुर्धर, वृद्धों की सेवा करने वाले, जितेन्द्रिय, हंसकर बोलने वाले और सब प्रकार से धर्म का सेवन करने वाले हैं। उनका क्रोध और प्रसन्नता कभी निरर्थक नहीं होती। वे मारने योग्य को मारते ही हैं और अवध्यों पर कभी क्रोध नहीं करते। वे यम-नियमादि पालन में कष्ट-सहिष्णु हैं। प्रजाजनों के प्रीतिपात्र हैं, स्वजनों में प्रीति उत्पन्न कराने वाले हैं। इन गुणों से अंलकृत श्रीराम रश्मियों से युक्त सूर्य की भांति देदीप्यमान हैं। उनका जीवन पूर्णरूप से निस्पृह, मर्यादित और त्यागमय था। उनके वीतराग स्वभाव का सबसे उत्तम उदाहरण हमें उस समय मिलता है जब राज्याभिषेक के स्थान पर उन्हें तुरन्त वन जाने की खबर दी जाती है। उनकी उस समय की स्थिति के बारे में कहा गया है-**आहुतस्याभिषेकार्थं वनाय प्रस्थितस्य च।न लक्षितो मुखे तस्य स्वल्पोऽप्याकारविभ्रमः।।** अर्थात् राज्यभिषेक की सुखद आज्ञा से न तो उनके मुख पर प्रसन्नता के चिन्ह दिखाई दिए और राज्य के बदले वनवास की आज्ञा मिलने पर न ही उनके मुख पर विषाद के चिन्ह दिखाई दिए। श्रीराम चन्द्र जी स्वयं इस प्रकार के आदर्श व्यक्तित्व के स्वामी थे इसीलिए अयोध्या का राज्य भी एक आदर्श राज्य था।

रामायण के अन्त में रामराज्य का वर्णन करते हुए कहा गया है कि (यु.का.38-25 से 31) श्रीराम जी के राज्य में न तो विधवाओं का करूण-क्रन्दन था, न सर्पों का भय था और न ही रोगों का भय था। राज्य भर में चोरों, डाकुओं और लुटेरों का कहीं नाम तक नहीं था। दूसरे के धन को लेने की बात तो दूर रही, कोई छूता तक नहीं था और राम के शासन-काल में किसी वृद्ध ने किसी बालक का मृतक-संस्कार नहीं किया। राम-राज्य में अपने-अपने वर्णानुसार धर्म-कृत्यों में तत्पर रहते थे अतः सब लोग सदा सुप्रसन्न रहते थे। श्रीराम दुःखी होंगे इस विचार से प्रजाजन परस्पर एक-दूसरे को दुःख नहीं देते थे। राम-राज्य में लोगों की आयु दीर्घ होती थी और लोग बहुत पुत्रों से युक्त होते थे। सभी अयोध्या निवासी रोग और शेक से रहित दीख पड़ते थे। राम-राज्य में वृक्ष सदा फूलते और फलते रहते थे। उनकी शखाएं लम्बी होती थीं। वर्षा यथासमय होती थी और सुख-स्पर्शी मन्द समीर चला करती थी। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र कोई भी लोभी प्रवृति का नहीं था। सब लोग अपना-अपना काम करते हुए एक-दूसरे से सन्तुष्ट रहा करते थे। श्रीराम के राज्य में समस्त प्रजा सत्य के साथ रहती थी और झूठ से सर्वदा सदा दूर रहती थी। सब लोग शुभगुणों से युक्त थे और सभी धर्मपरायण होते थे। महात्मा तुलसीदासजी ने इस सम्बन्ध में कहा है-

बरनाश्रम निज निज धरम निरत बेद पथ लोग।
चलहिं सदा पावहिं सुखहि, नहिं भय सोक न रोग।।
दैहिक दैविक भौतिक तापा, राम राज नहिं काहुहि ब्यापा।
सब नर करहिं परस्पर प्रीती, चलहिं स्वधर्म निरत श्रुतिनीती।।

-महर्षि दयानन्द धाम, महादेव, सुन्दरनगर-175018 (हि.प्र.)

ऋषि दयानन्द क्या चाहते थे?

❒ मनमोहन कुमार आर्य

ऋषि दयानन्द महाभारत के बाद विगत लगभग पांच हजार वर्षों में वेदों के मंत्रों के सत्य अर्थों को जानने वाले व उनके आर्ष व्याकरणानुसार सत्य, यथार्थ तथा व्यवहारिक अर्थ करने वाले ऋषि हुए हैं। महाभारत के बाद ऐसा कोई विद्वान नहीं हुआ है जिसने वेदों के सत्य, यथार्थ तथा महर्षि यास्क के निरुक्त ग्रन्थ के अनुरूप व्यवहारिक, उपयोगी, कल्याणकारी एवं ज्ञान-विज्ञान के अनुरूप अर्थ किये हों। वेदों का यथार्थ ज्ञान हो जाने पर मनुष्य ईश्वर, जीवात्मा और प्रकृति के सत्य रहस्यों व ज्ञान-विज्ञान से परिचित एवं अभिज्ञ हो जाता है। ऋषि दयानन्द से पूर्व उन जैसा वेदों का विद्वान व प्रचारक न होने के कारण विगत पांच हजार वर्षों से मनुष्य ईश्वर व जीवात्मा के सत्य स्वरूप के विषय में शंकित व भ्रमित था। इस बीच बड़ी संख्या में मत-मतान्तर उत्पन्न हुए परन्तु वह वेदों व उपनिषदों के होते हुए भी ईश्वर के सत्यस्वरूप को लेकर भ्रमित रहे। सभी मतों के आचार्यों में विवेक का अभाव प्रतीत होता है अन्यथा वह जड़ पूजा, मिथ्या पूजा व मूर्तिपूजा का विरोध व खण्डन अवश्य करते और जनसामान्य को बताते कि ईश्वर सच्चिदानन्द एवं निराकार आदि गुणों वाला है और उसकी उपासना ध्यान करने सहित स्तुति, प्रार्थना व उपासना के माध्यम से ही की जा सकती है।

महर्षि दयानन्द क्या चाहते थे? इसके उत्तर में यह कह सकते हैं कि वह संसार को ईश्वर, जीवात्मा तथा प्रकृति का सत्यस्वरूप बताना चाहते थे जो सृष्टि के आरम्भ में सर्वव्यापक ईश्वर ने अपने ज्ञान वेदों के द्वारा अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न चार ऋषियों को दिया था। ऋषि दयानन्द ने ईश्वर व जीवात्मा विषयक वेदों के समस्त ज्ञान को अपने प्रयत्नों से प्राप्त किया था और इतिहास में पहली बार इसे सरल लोकभाषा हिन्दी सहित संस्कृत में देश-देशान्तर में पहुंचाया। ईवरीय ज्ञान ''वेदी सब सत्य विद्याओं का ग्रन्थ है। इस कारण वह इसे सभी देशवासियों सहित विश्व के लोगों तक पहुंचाना चाहते थे जिससे वह वेदों का आचरण कर धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त हो सकें। वह इस कार्य में आंशिक रूप से सफल भी हुए। आज इसका प्रभाव समस्त विश्व पर देखा जा सकता है। इसी कार्य के लिये ऋषि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना की थी। इस कार्य को सम्पादित करने के लिये उन्होंने अनेक ग्रन्थों का प्रणयन किया जिनमें ऋग्वेद (आंशिक) तथा यजुर्वेद के संस्कृत व हिन्दी भाष्य सहित सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि, पंचमहायज्ञविधि, आर्याभिविनय, व्यवहारभानु, गोकरूणानिधि आदि ग्रन्थ हैं। देश व विश्व के लोग ईश्वर व आत्मा के सत्यस्वरूप तथा गुण-कर्म-स्वभाव को जानें और सही विधि से ईश्वरोपासना करें, इसके लिये उन्होंने पंचमहायज्ञविधि लिखी जिसमें उन्होंने प्रातः व सायं ध्यान विधि से ईश्वर की उपासना की विधि ''सन्ध्यां के नाम से प्रस्तुत की है। ईश्वर का ध्यान करने की यही विधि सर्वोत्तम है। इसका ज्ञान सभी उपासना पद्धतियों सहित सन्ध्या का अध्ययन करने से होता है। अतीत में अनेक पौराणिक विद्वानों ने भी अपनी सन्ध्या व उपासना पद्धतियों को छोड़कर ऋषि दयानन्द लिखित संन्ध्या पद्धति की शरण ली थी। पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी ने अपनी आत्माकथा में इसका उल्लेख करते हुए बताया है कि काशी में जिस उच्च कोटि के विद्वान से वह पढ़ते थे उन्होंने यह जाने बिना की पुस्तक किसकी लिखी हुई है, इसे सर्वोत्तम जानकर इसी विधि से उपासना करना आरम्भ कर दिया था। बाद में जब उन्हें यह पता चला कि वह स्वामी दयानन्द सरस्वती ने लिखी है तो उन्हें ऋषि दयानन्द की विद्वता को जानकर सुखद आश्चर्य हुआ था।

महर्षि दयानन्द ने 10 अप्रैल, सन् 1875 को मुम्बई नगरी में आर्यसमाज की स्थापना की थी। इसके बाद आर्यसमाज के 10 नियम बनाये गये जिनमें से आठवां नियम है 'अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।' हम इससे पूर्व किसी संस्था व देश के संविधान में इस नियम का विधान नहीं पाते। यह नियम ऐसा नियम है कि जो समाज व देश इस नियम को अपना ले, वह ज्ञान व विज्ञान में शिखर स्थान प्राप्त कर सकता है। आश्चर्य है कि हमारे देश में इसे अब तक लागू नहीं किया जा सका। ऋषि दयानन्द अपने ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में देश के सभी बालक व बालिकाओं के लिये वेदानुमोदित शास्त्रीय व ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा का विधान करते हैं। वह लिखते हैं कि शिक्षा व विद्या देश के सभी बालक व बालिकाओं को निःशुल्क व समान रूप से मिलनी चाहिये। वैदिक शिक्षा में बच्चों को गुरुकुल में रहकर शिक्षा प्राप्त करनी होती है। राजा हो या रंक, सबको शिक्षा का अधिकार है, इसका विधान ऋषि दयानन्द ने किया है। उन्होंने यह भी लिखा है कि किसी भी विद्यार्थी के साथ किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं होना चाहिये। सबको समान रूप से वस्त्र, भोजन एवं अन्य सभी सुविधायें मिलनी चाहियें। यह भी कहा है कि शिक्षा सभी बालक व बालिकाओं के लिये अनिवार्य होनी चाहिये। जो माता-पिता अपने बच्चों को गुरुकुल, पाठशाला व विद्यालयों में न भेंजे, वह दण्डनीय होने चाहिये।

मनुष्य जब ईश्वर व जीवात्मा के विषय को यथार्थ रूप में जान लेता है तब वह सभी प्रकार के अज्ञान व अन्धविश्वासों सहित मिथ्या परम्पराओं से भी परिचित होकर सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करता है। जन्मना जातिवाद पर भी ऋषि दयानन्द ने प्रहार किया है। जन्मना जाति व्यवस्था को ऋषि दयानन्द ने मरण व्यवस्था की उपमा दी है। वह इस व्यवस्था से दुःखी थे। उन्होंने वेदों के ज्ञान व अपने विवेक से युवक व युवती के विवाह का विधान कर उनके गुण, कर्म व स्वभाव की समानता व अनुकूलता पर बल दिया है। वह बेमेल विवाह व बाल विवाह के विरोधी थे। वह इन्हें वेद विरुद्ध एवं देश व समाज की उन्नति में बाधक मानते थे। ऋषि दयानन्द ने युवावस्था की विधवाओं व विधुरों का विरोध नहीं किया। यद्यपि वह सभी प्रकार के पुनर्विवाहों को उचित नहीं मानते थे परन्तु आर्यसमाज इसे आपदधर्म के रूप में स्वीकार करता है। वेद में भी विधवा स्त्री के पुनर्विवाह का विधान है। सभी सामाजिक परम्पराओं पर महर्षि दयानन्द की विचारधारा प्रकाश डालती है।

ऋषि दयानन्द देश में स्वराज्य देखना चाहते थे। इस विषय में उन्होंने सत्यार्थप्रकाश में स्वदेशीय राज्य को सर्वोपरि उत्तम बताया है और कहा है कि मत-मतान्तर के आग्रह रहित, अपने और पराये का पक्षपातशून्य, प्रजा पर पिता माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य पूर्ण सुखदायक नहीं हो सकता। उनके इन

विचारों के परिणामस्वरूप कालान्तर में देश में आजादी के लिये गरम व नरम विचारधारायें सामने आयीं। देश की आजादी के आन्दोलन में सबसे अधिक योगदान भी आर्यसमाज ने ही किया। आर्यसमाज ने देश की आर्य हिन्दू जाति को धर्मान्तरण से बचाया। आर्यसमाज की वैदिक विचारधारा का प्रचार होने से सभी मत-मतान्तरों के विज्ञ व विवेकशील लोगों ने इसे विद्यमान अन्य मतों की विचारधारा से उत्तम जानकर कुछ ने इसे अपनाया भी। इसका परिणाम यह हुआ कि विश्व इतिहास में पहली बार वैदिक सनातन धर्म से इतर मतों के विज्ञजनों ने वैदिक विचारधारा वा वैदिक धर्म को स्वीकार किया और ऋषि के अनुयायियों वा आर्यसमाज ने उन्हें अपने धर्म में सम्मिलित किया। आज भी ऐसी घटनायें होती रहती हैं। ऋषि दयानन्द की विचारधारा मांसाहार की विरोधी एवं शुद्ध अन्न व भोजन का सेवन करने की पोषक है। मनुष्य का भोजन अन्न, शाक-सब्जी, फल एवं दुग्ध आदि ही हैं। इनके सेवन से मनुष्य निरोग रहते हुए लम्बी आयु को प्राप्त करता है। मांसाहार अनेक रोगों को आमन्त्रण देता है। मांसाहार ईश्वर प्राप्ति में बाधक है और मांसाहार हिंसायुक्त कर्म व अभक्ष्य होने सहित वेदों में इसकी आज्ञा न होने के कारण जन्म-जन्मान्तर में इसका परिणाम दु:ख पाना होता है। आर्यसमाज ने वायु-वृष्टि जल के शोधक व आरोग्यकारक अग्निहोत्र यज्ञ का भी प्रचार किया जिससे असंख्य प्राणियों को सुख लाभ होने से पुण्यार्जन होता है और हमारा यह जन्म व परजन्म सुख व कल्याण से पूरित होता है।

महर्षि दयानन्द का मुख्य उद्देश्य संसार से अविद्या का नाश तथा विद्या की वृद्धि करने सहित विद्या के ग्रन्थ वेदों सहित ज्ञान व विज्ञान को प्रतिष्ठित व प्रचारित करना था। वेद की किसी भी मान्यता का ज्ञान व विज्ञान से विरोध नहीं है। वस्तु स्थिति यह है कि वेदों की सभी मान्यतायें ज्ञान-विज्ञान की पोषक हैं। ऋषि दयानन्द की दृष्टि में वेद और वेदानुकूल मान्यतायें सत्याचरण का पर्याय हैं और यही वास्तविक मनुष्य धर्म हैं। सभी को ईश्वर प्रदत्त मानवमात्र व प्राणीमात्र के हितकारी वेदमत का ही अनुसरण करना चाहिये। यही ऋषि दयानन्द को अभीष्ट था। इसी से विश्व में सुख व शान्ति का वातावरण बनाने में सहायता मिल सकती है। इस चर्चा के साथ इस लेख को विराम देते हैं।

-196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001, फोन: 09412985121

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल

के तत्वावधान में

राष्ट्रीय व्यक्तित्व विकास एवं आत्मरक्षण शिविर

दिनांक 31 मई 2019 से 9 जून 2019 तक, स्थान: महर्षि दयानन्द की निर्वाण स्थली अजमेर

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी कन्याओं में शारीरिक, आत्मिक, नैतिक बल एवं वैदिक सिद्धांतों, संस्कारों का प्रशिक्षण देकर उन्हें राष्ट्र, समाज व परिवार के निर्माण में अहम भूमिका निभाने हेतु सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल यह शिविर आयोजित कर रहा है। शिक्षिका, सहशिक्षिका, नायिका की भी इस बार अलग कक्षाएं लगाई जाएगी और अन्त में इनकी परीक्षा भी होगी जो उत्तीर्ण होंगे उन्हें इसके प्रमाण पत्र दिये जाएंगे। अधिक से अधिक संख्या में इसका लाभ उठायें।

साध्वी डॉ.उत्तमायति
प्रधान संचालिका, मो. 09672286863

मृदुला चौहान
संचालिका, मो. 09810702760

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर **7000/-रुपये** व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

(पृष्ठ 1 का शेष)

दिनांक 03 मार्च 2019 को प्रात: 8 बजे यज्ञशाला में उद्घाटन समारोह हुआ जिसमें डॉ. रमेश आर्य, उपप्रधान, डी.ए.वी कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति, श्री राजीव चौधरी, श्रीमती अमृतापाल आदि मुख्य यजमान थे। इस अवसर पर श्री जगत वर्मा एवं ब्रह्मचारियों के भजन प्रस्तुत किए गए। इसके साथ ही डॉ. महावीर अग्रवाल (वाईचासंलर, पतंजलि विश्वविद्यालय हरिद्वार) द्वारा विशेष प्रवचन हुआ। इस अवसर पर श्रीमती उषा अरोड़ा (दिल्ली), श्री रघुनाथ राय आर्य (चण्डीगढ़), जिसमें श्रीमती अल्पना शर्मा (प्राचार्या आर्य कन्या गुरुकुल राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली), श्रीमती सुमन चांदना, श्रीमती सुधा वर्मा, श्री मृगलानी के मुख्य प्रवचन हुए। इस कार्यक्रम की संयोजिका श्रीमती अरूणा सतीजा जी स्वास्थ्य ठीक ना होने के कारण उपस्थित नहीं हो सकी। श्रीमती अल्पना शर्मा ने अपने वक्तव्य में पूरे भारत में फैले आर्य कन्या गुरुकुलों द्वारा शिक्षित वेद प्रवक्ताओं की चर्चा की वहीं दूसरी ओर आर्य कन्या गुरुकुल राजेन्द्र नगर द्वारा तैयार की जा रही ब्रह्मचारिणयों के विषय में

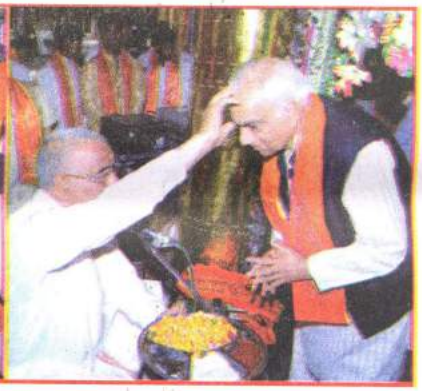

श्रीमती अमृतापाल (दिल्ली) श्रीमती भानुबेन (भुज), डॉ. महेश वेलाणी (भुज), श्रीमती मरवाहा (दिल्ली) आदि को सम्मानित किया गया।

इस वर्ष प्रथम बार महिला सम्मेलन का आयोजन आर्य जगत् की महिलाओं के द्वारा आए सुझाव के अनुसार आयोजित किया गया। सम्मेलन का मुख्य वक्य था **"वेद के प्रचार प्रसार में महिलाओं की प्रमुख भूमिका।"** कार्यक्रम अपराह्न 1.00 से 2.30 तक आयोजित किया गया जिसकी अध्यक्षता माता सत्यप्रिया (हिमाचल प्रदेश) ने की भी जानकारी दी। समस्त भारत में आने वाले वर्षो में यही कन्याएं वेद प्रचार का एक सक्ष्म माध्यम बनेगी।, क्योंकि यह जगजाहिर है कि पुरुषों से अधिक माताओं द्वारा दी गई शिक्षा मन एवम् मस्तिष्क पर प्रभावी रूप से जगह बनाती है।

अपराह्न 2.30 बजे से 5 बजे तक **युवा उत्सव एवं पारितोषिक वितरण समारोह** आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता स्वामी शान्तानन्द जी (भुज) द्वारा की गई। मुख्य अतिथि के रूप में

श्री देव कुमार, प्रधान, गुजरात आर्य वीर दल उपस्थित थे। विशेष आमन्त्रित के रूप में श्री राजीव चौधरी, श्री एस के दुआ उपस्थित थे। इस अवसर पर सौराष्ट्र के स्कूलों एवं कालेजों के विद्यार्थियों के लिए टंकारा ट्रस्ट की ओर से बॉलीबाल प्रतियोगिता, प्रश्नमंच, व्यायाम प्रदर्शन, उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारियों एवं आर्य समाज जामनगर की कन्याओं द्वारा वर्तमान सामाजिक समस्याओं पर संदेशात्मक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। प्रतियोगियों को नकद पुरस्कार, प्रमाण पत्र व बाहर से आने वालों को किराया दिया गया। **इसी अवसर पर डॉ. मुमुक्षु जी आर्य (नोएडा) द्वारा वेद पाठ की प्रतियोगिता रखी गई।** इस कार्यक्रम का संयोजन टंकारा ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री हंसमुख परमार ने किया। इस सत्र के अन्त में पं. रमेश चन्द मेहता (पूर्व स्नातक टंकारा) ने ब्रहम्चारियों को आशीर्वाद देते हुए अपने टंकारा प्रवास के दिनों को याद कराते हुए अपने संस्मरण सुनाए।

सायंकालीन यज्ञ सायं 5 बजे से 7 बजे तक आयोजित किया गया। प्रात: एवं सायं यज्ञ के समय कई महानुभावों को टंकारा ट्रस्ट को दिए जाने वाले अभूतपूर्व योगदान के लिए सम्मानित किया गया।

वेद प्रवचन एवं भक्ति संगीत सम्मेलन रात्रि 8 बजे से 10 बजे तक आयोजित किया गया। इस अवसर पर जहाँ उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारियों द्वारा ऋषि गुणगान के भजन प्रस्तुत किए गए, वहीं मुख्य रूप से श्री जगत वर्मा जोकि जालन्धर से पधारे थे, के भजन हुए। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री योगेश मुंजाल जी ने की और विशेष अतिथि के रूप में श्री लधाभाई पटेल, श्री सुधीर मुंजाल, श्रीमती भानुबेन आदि उपस्थित थे।

04 मार्च 2019 को शिवरात्रि एवं बोधोत्सव का मुख्य कार्यक्रम रहा जिसमें प्रात: 9 बजे यज्ञ की पूर्णाहुति की गयी। इसमें मुख्य यजमान डॉ. रमेश आर्य, उपप्रधान, डी.ए.वी कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति, मुंजाल परिवार एवम् श्री योगेश मुंजाल, श्री सुधीर मुंजाल, श्री लधाभाई पटेल, डॉ. महेश वेलाणी परिवार सहित आदि उपस्थित थे। सर्वप्रथम श्री डॉ. रमेश आर्य जी ने ब्रह्मा का वरण कर उन्हें तिलक लगाया एवं साथ ही वेदपाठियों का भी वरण किया। तदुपरान्त अग्निद्धान कर यज्ञ आरम्भ किया।

तदुपरान्त डॉ. रमेश आर्य सभी की शुभकामनाएं एवं आशीर्वाद ग्रहण करते हुए ध्वजस्थल पर पहुंचें। जहां ट्रस्ट के वयोवृद्ध ट्रस्टी श्री लधाभाई पटेल ने ट्रस्ट की ओर से पगड़ी पहना कर उनका स्वागत किया तदुपरान्त भारत से आए हुए लगभग 150 प्रतिनिधि आर्य महानुभावों ने उन्हें फूलमाला अर्पित कर उनका स्वागत किया। भारत का कोई ऐसा प्रान्त नहीं था, जिसका प्रतिनिधित्व इस अवसर पर न हुआ हो। श्री डॉ. रमेश आर्य ने सभी उपस्थित महानुभावों का धन्यवाद प्रकट किया और उनके द्वारा ध्वजारोहण किया गया। इस अवसर पर श्री सत्यपाल पथिक जी ने ध्वजगीत गाया।

तदुपरान्त एक विशेष मंच से ओ३म् ध्वज लहराकर शोभायात्रा का आरम्भ श्री डॉ. रमेश आर्य द्वारा किया गया। शोभायात्रा में स्वामी शान्तानन्द, स्वामी सच्चिदानन्द, डॉ. रमेश आर्य, श्री योगेश मुंजाल, श्री सुधीर मुंजाल, श्रीमती अन्जु मुंजाल, श्री लधाभाई पटेल, श्री हंसमुख परमार, पं. रमेश चन्द्र मेहता, श्री अशोक कुमार आर्य, श्री राजीव चौधरी, श्री रघुनाथ राय आर्य, श्री सुशील भाटिया, श्री राम चन्द्र अरोडा आदि उपस्थित थे। लगभग डेढ़ घंटे तक शोभायात्रा का संचालन किया गया।

अपराह्न 3 बजे से 5 बजे तक विशेष श्रद्धांजलि सभा का आयोजन श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, (प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा) की अध्यक्षता में किया गया जिसमें विशिष्ठ अतिथि के रूप में श्री डॉ. रमेश आर्य उपस्थित थे। इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में पधारे डॉ. महावीर अग्रवाल, वाईसचांसलर, पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार ने अपने वक्तव्य में कहा कि टंकारा आर्यो की प्रेरणा स्थली हैं। यहाँ आकर एक विशेष ऊर्जा का अनुभव हो रहा है। शरीर का रोम-रोम

प्रफुलित है यह सोचते हुए कि इस ग्राम के जिस मार्ग से गुजर रहा हूँ उससे कभी मेरा देव दयानन्द (मूल शंकर) गुजरा होगा और सम्भवता उन्हीं के पदचिन्हों पर आज मेरे पद भी पढ़ रहे होगें। ऋषि भक्तों के लिए इससे अधिक आनन्द का अनुभव हो पाना सम्भव नहीं। मेरी उपस्थित आर्य जनों से प्रार्थना है यहाँ से प्रतिवर्ष आए और यहाँ एक नई प्रेरणा एवम् ऊर्जा लेकर अपने सेवा क्षेत्र में कार्य करें।

महात्मा चैतन्य मुनि (हिमाचल) ने अपने वक्तव्य में आज पदम्श्री डॉ. पूनम सूरी जी द्वारा डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं के माध्यम से वेद प्रचार और युवाओं में वैदिक मान्यताओं को प्रचलित एवम् पल्लावित करने का जो कार्य किया जा रहा है उसकी चर्चा की और उपस्थित जनसमूह को उनके द्वारा इंजीनिरिंग कॉलेज, मेडीकल कॉलेज एवम् प्रबन्धन कॉलेजों में जाकर जिस प्रकार से प्रचार किया जा रहा है उसकी चर्चा भी की और डॉ. महावीर जी के वक्तव्य को सम्बोधित करते हुए यह कहा कि-यह बात सत्य है कि इस भूमि पर आते ही एक नई ऊर्जा का अनुभव होता है।

आचार्य इन्द्रदेव ने अपने वक्तव्य में कहा कि-मैं पिछले कई वर्षो से वेद प्रचार में संलग्न हूं लेकिन टंकारा में प्रथम बार आ रहा हूं। जब भी मैंने आने का सोचा तो मन और मस्तिष्क ने यही कहा कि मैं उस दिन ही टंकारा जाऊंगा जब ऋषि ऋण से एक प्रतिशत भी उऋण होने में सफल हुआ हुंगा। आज इस मंच से मैं सहर्ष कहना चाहूंगा कि पिछले 2 वर्षो से सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार चल परिचित प्रवचन माध्यम को छोड़कर कक्षाओं के माध्यम से सत्यार्थ प्रकाश को प्रसारित कर रहा हूं। तीन दिन से लेकर एक सप्ताह तक की कक्षाए लेता हूं जिसमें बच्चों, युवाओं एवम् प्रोढ़ों के लिए अलग-अलग पाठक्रम बना कर सेवा कार्य कर रहा हूं और इसमें मुझे सफलता एवम् देश भर से अच्छी प्रतिक्रिया प्राप्त हो रही है।

इस अवसर पर स्वामी संकल्पानन्द स्मृति सम्मान महात्मा चैतन्य मुनि (हिमाचल प्रदेश) को वेद प्रचारक के रूप में दिया गया जोकि प्रतिवर्ष आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई की ओर से इस अवसर पर

(शेष पृष्ठ 18 पर)

टंकारा ऋषि बोधोत्सव

2019 की चित्रमय झांकी

टंकारा ऋषि बोधोत्सव 2019 की चित्रमय झलकियां

टंकारा ऋषि बोधोत्सव 2019 की चित्रमय झलकियां

टंकारा बोधोत्सव की चित्रमय झलकियां

आप ऋषि जन्मभूमि हेतू दानराशि निम्नलिखित रूप से भेज सकते हैं

दानराशि नकद/चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा **"श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा"** के नाम दिल्ली कार्यालय आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 अथवा श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा जिला-मौरबी-363650 (गुजरात) के पते पर भिजवा सकते हैं अथवा खाता न. 4665000100001067, पंजाब नैशनल बैंक, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली, IFSC CODE PUNB0466500 में जमा करा सकते हैं। बैंक में जमा की गई दानराशि/तिथि/पते की सूचना एवम् रसीद किस नाम से बनानी हैं मो. 09560688950 पर लिखित सूचना मैसेज/वट्सअप द्वारा देवें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

टंकारा समाचार के प्रसार में सहयोग दें

'टंकारा समाचार' उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'टंकारा समाचार' की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

'टंकारा समाचार' का वार्षिक शुल्क 100/- रूपये एवम् आजीवन शुल्क 500/- रूपये हैं।

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं। **-प्रबन्धक**

इतिहास के झरोखे से ... आदर्श शिष्य दयानंद

❒ ईश नारंग

❑ 1857 का प्रथम स्वाधीनता संग्राम समाप्त हो चुका था। भारत का शासन अब ईस्ट इंडिया कम्पनी के अधीन न हो कर सीधा क्वीन के अन्तर्गत आ गया था। जिस घटना की चर्चा में करने जा रहा हूँ. वह नवम्बर 1860 ईस्वी की है। कार्तिक मास शुक्ल पक्ष द्वितीया विक्रमी 1917।

❑ एक 36 वर्ष का अनजान युवक एक अन्य अनजान व्यक्ति की कुटिया का दरवाज़ा खटखटाता है। बाहर वाले युवक ने तो संभवत: अंदर वाले व्यक्ति के विषय में कुछ सुन व जान रखा था। किन्तु अंदर वाला व्यक्ति बाहर वाले को बिलकुल नहीं जानता। अंदर एक वृद्ध व्यक्ति था लगभग 62 वर्ष का। वृद्ध अवस्था के कारण क्रोधित कुछ जल्दी हो जाता था। इस प्रकार असमय कोई बिना पूर्व सूचना के दरवाज़े पर दस्तक दे, तो उसकी मन की स्थिति हम समझ सकते हैं। कुछ अचम्भे में और कुछ गुस्से में अंदर से आवाज़ आती है। 'कौन है.? आगंतुक उत्तर देता है ''गुरुवर यही तो जानने आया हूँ कि मैं कौन हूँ। ''कुटिया के अंदर वाले वृद्ध ने सोचा कि कोई प्रतिभाशाली जिज्ञासु ही लगता है जो मुझ से कुछ शिक्षा प्राप्त करने आया है। Perhaps his sixth sense had sensed something-किन्तु उसे परखना अभी शेष था।

❑ फिर अंदर से आवाज़ आती है। इस बार आवाज़ कुछ कम आक्रोश वाली है। अब तक कुछ व्याकरण आदि पढ़े हो कि नहीं बाहर के 36 वर्ष के युवक को भी कुछ आशा की किरण दिखाई दी। उसने सुन रखा था कि इस कुटिया में रहने वाला प्रज्ञा चक्षु गुरु सरलता से किसी को शिष्य नहीं बनाता। पूरी परीक्षा ले कर ही शिष्य बनने के अनुमति देता है। उस 36 वर्षीय युवक ने सहज भाव से कुछ कौमुदी व सारस्वत एवं नव व्याकरण आदि ग्रंथों के नाम बता दिए।

❑ अंदर से आने वाली आवाज़ पुन: कडक हो गई। ''इन सब ग्रंथों को यमुना में फेंक आओ और अपने मस्तिष्क को भी अन्धकार से मुक्त कर के उस की सफाई कर के स्वच्छ स्लेट ले कर मेरे पास आओ। तब मेरे पास शिक्षा की कोई आशा रखना।

❑ कल्पना कीजिए। कितना कठिन कार्य था यह! उस युवक ने 21 वर्ष की आयु में अपना घर छोड़ा था। पूरे 15 वर्ष तक, पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करता हुआ सोचता है कि इतने वर्षों की कड़ी मेहनत को समाप्त कर दूँ? इस गुरु ने तो मुझमें कुछ देखा ही नहीं, कुछ सुना ही नहीं, बिना देखे ही उसे कूड़ा करकट कह दिया. और कह रहा है यमुना में बहा दो और फिर इस सब के बाद भी इस नवीन गुरु ने मुझे स्वीकार नहीं किया तो? उसे ऐसा लग रहा था जिसे आज की भाषा में कहे तो 1000 वोल्ट का करंट लग गया हो।

❑ तो भी उसने इतनी प्रशंसा सुन रखी थी इस नए गुरु के विषय में, कि इतना बड़ा जोखिम उठाने का भी निश्चय कर लिया। आगंतुक युवक दृढ. निश्चय कर के यमुना पर गया और उन सब ग्रंथों को प्रवाहित कर के पुन (उपस्थित हो गया गुरु के द्वार पर) द्वार पर फिर दस्तक दी। अंदर से फिर वही आवाज़ ''कौन हो?'' इस बार दयानंद ने अपना नाम बताया 'सन्यासी दयानंद' इस बार जो उत्तर गुरु से मिला वह और भी अधिक करंट लगाने वाला था। हम सन्यासियों को नहीं पढाते। तुम्हारी आजीविका का कोई साधन नहीं। हमारी कुटिया में तुम्हारे भोजन आदि की व्यवस्था भी नही हो सकती। विरजानंद जी स्वयं किराये की कुटिया में रहते थे।

❑ दयानंद उस समय भिक्षा आदि से ही अपनी भूख की व्यवस्था करते थे। मथुरा में उस समय वैसे ही अकाल पड़ा हुआ था। यही उत्तर दे दिया 'गुरु जी भिक्षाटन ही मेरी आजीविका है'।

❑ गुरु विरजानंद संभवत: अभी और परीक्षा लेना चाहते थे। बिना दरवाज़ा खोले ही बोले जिसके रहन सहन, व भोजन की व्यवस्था न हो उसे हम नहीं पढा सकते।

❑ वह 36 वर्षीय आदित्य ब्रह्मचारी दयानंद फिर भी विचलित नहीं हुआ। हतोत्साहित नहीं हुआ। निकल पड़ा व्यवस्था करने अपने भोजन की। ईश कृपा से वह भी कुछ दिन बाद हो गई। फिर पहुंचा गुरु के द्वार। सूचित किया गुरूजी भोजन व आवास की व्यवस्था हो गई। अब तो कृपा कीजिए अपना शिष्य बना लीजिये।

❑ अब गुरु जी ने एक और शर्त लगा दी। हम जो एक बार पढ़ा देते है उसे दोबारा नहीं पढाते। संभवत: गुरु अपने भावी शिष्य की प्रतिबधता की अभी और परीक्षा ले रहा था। स्वीकार है गुरु जी'

❑ और इस प्रकार दयानंद की शिक्षा शुरू हो गई। गुरु सुविज्ञ थे। शिष्य भी प्रतिभाशाली था। कड़ी मेहनत के साथ ज्ञान अर्जित करने लगा। किन्तु गुरु की प्रताड़ना कम नहीं हुई। एक दिन किसी सूत्र का अर्थ पुन: बताने का आग्रह किया, 'गुरु जी मुझे इस का भाव ठीक से समझ नहीं आया। कृपया दोबारा बता दीजिये'।

❑ हम बार बार अर्थ बताने के लिए थोड़े ही बैठे है। हमने तो तुम्हे शिक्षा आरम्भ करने से पूर्व ही बता दिया था कि हम किसी का अर्थ दोबारा नहीं बताते। जाओ स्वयं प्रयास करो और जब तक सूत्र का अर्थ समझ न आ जाये हमारे पास मत आना।

❑ कुटिया से गया और यमुना में खड़ा हो गया, मनन करने लगा। क्या बताया था गुरु जी ने। याद नहीं आ रहा था. किन्तु गुरु जी की कड़क आवाज़ तो याद आ रही थी, जब तक सूत्र का अर्थ याद न आ जाये हमारे पास नहीं आना। दृढ़ निश्चयी दयानंद तीन दिन और तीन रात यमुना में खड़ा रहा। बिना कुछ खाए या पानी भी पिए, कल्पना कीजिए। बंधुओ व बहनों! सर्दी का मौसम, यमुना का ठंडा पानी, शरीर पर केवल एक कौपीन और तीन दिन तीन रात! किन्तु दयानंद जैसा निष्ठावान शिष्य विचलित नहीं हुआ। मनन करता रहा। यमुना के शीतल निर्मल जल में खड़े रहने के बाद सूत्र का अर्थ स्पष्ट हो गया। भाग कर गुरु चरणों में पहुंचा। सूत्र का आशय बता दिया। गुरु के चेहरे पर कोई प्रसन्नता का भाव फिर भी नहीं था। उलटा कड़क स्वर में पूछा इतने दिन कहाँ रहे। दयानंद ने अपनी यमुना में 72 घंटे खड़े रहने की बात बता दी।

- दंडी स्वामी यही तो जानना चाहते थे, कितनी कृढ़ता है इस ब्रह्मचारी में। कितनी जिज्ञासा है, कितना परिश्रम करने की क्षमता है, कितनी स्मरण शक्ति है इसमें, वह स्वयं तो प्रज्ञा चक्षु थे किन्तु अभूतपूर्व स्मरण शक्ति के धनी थे। दण्डी जी ने बनारस और मथुरा में दाक्षिणात्य ऋग्वेदी ब्राह्मण के मुख से अष्टाध्यायी के सूत्र सुने और सुनकर कंठस्थ किये थे। दयानंद की भी स्मरण शक्ति की परीक्षा लेना चाहते थे। आज दयानंद 100 प्रतिशत अंक ले कर उत्तीर्ण हुआ था।
- अध्ययन, पठन पाठन चलता रहा। प्रताड़ना भी कम नहीं हुई। सज़ा देना, अपमानित करना, मारना पीटना, यह सब दंडी स्वामी की शिक्षा दीक्षा का अभिन्न अंग थे, इन सब को गुरु का अधिकार मान कर उस योग्य शिष्य ने सब स्वीकार किया।
- कुटिया में सफाई करने और झाड़ू लगाने की ज़िम्मेदारी भी दयानंद की थी। अन्य शिष्य भी थे किन्तु सब से अधिक और कठिन काम दयानंद को ही मिलता था और गलती होने पर दंड भी अन्य शिष्यों से अधिक ही मिलता था। आपने वह घटना भी सुनी होगी कि एक दिन झाड़ू लगा कर दयानंद ने कूड़े व मिटटी की ढेरी एक स्थान पर कुटिया में ही छोड़ दी थी, गुरूजी आये और उनका पैर उस ढेर से टकरा गया। प्रज्ञा चक्षु विरजानंद गिरते गिरते बचे। उन्हें पता था। यह कार्य तो दयानन्द के जिम्मे था। अत्यंत क्रोधित हुए। मौखिक गुस्सा भी किया और अपने हाथों से और उसी झाड़ू से ही अच्छी खासी पिटाई भी की। दयानंद ने चुपचाप सब स्वीकार किया।
- जब गुरु जी कुछ शांत हुए तो जा कर इनसे क्षमा मांगी और इनके हाथ और पांव दबाने लगे। बोले 'गुरु जी मेरा शरीर तो ब्रह्मचर्य व्रत से ठोस बन चुका है। आपके वृद्ध क्षीण हाथों को अवश्य कष्ट हुआ होगा। मै आपके हाथ व पैर दबा देता हूँ'। यह थी दयानंद की गुरु के प्रति समर्पण व श्रद्धा अपना सर्वस्व अर्पण कर रखा था गुरु के प्रति।
- आज कल का कोई विद्यार्थी होता तो आप कल्पना कर सकते है, आज बच्चे स्कूल में अध्यापक को मारने के लिए रिवाल्वर ले के भी पहुँच जाते है। महिला अध्यापिकाओं का अपहरण तक कर लेते है।
- किन्तु वह तो दयानंद था। वह दयानंद जिसने 15 वर्ष तक पर्वतो की कंदराओं में, बीहड़ जंगलों में, हिमालय की बर्फीली चोटिओं पर जा जा कर सच्चे गुरु की तलाश की थी। सच्चा ज्ञान पाने की जिज्ञासा थी उस में। गुरु का क्रोध उसके लिए प्यार था। कबीर का वह दोहा दयानंद पर बिलकुल सटीक बैठता है।

'गुरु कुम्हार, सिख कुम्भ है, घड़ी घड़ी काढ़े खोट,
अंदर हाथ सहार दे बाहर मारे चोट।

- कुम्हार जब माटी का घड़ा बना रहा होता है तो उसमे दोष निकालने के लिए, उसकी ठीक शेप देने के लिए बाहर से एक लकड़ी की फटी से चोट लगाता है। किन्तु ठीक उसी स्थान पर उसका दूसरा हाथ उसे अंदर से सहारा दे रहा होता है। उसे चिंता रहती है की मेरी चोट से कहीं घड़ा टूट न जाये। विरजानंद भी उसी प्रकार का कुम्हार था। उसने दयानंद जैसा इतना सुंदर सुडौल घड़ा बनाया कि जिसने भारत ही नहीं अपितु पूरे संसार की ज्ञान की प्यास बुझा दी। दुनिया में एक नई क्रांती उत्पन्न कर दी।
- इसी क्रम में, इसी दिनचर्या में ढाई-तीन वर्ष बीत गये। अनेक बार पिटाई हुई, अनेक बार अपमान हुआ। कोई गिला नहीं। कोई शिकवा नहीं, कोई शिकायत नहीं। गुरु के प्रति कोई अश्रद्धा नही। यह सब तो गुरु का अधिकार है। मेरा कर्तव्य तो केवल और केवल गुरु की सेवा और अधिक से अधिक शिक्षा प्राप्त करना है।
- शिक्षा समाप्त हुई। दक्षिणा का समय आया। शिष्य को पता था गुरु को लौंग पसंद थे। किन्तु वह तो स्वयं भिक्षा पर आश्रित थे। जिस सज्जन से भोजन प्राप्त कर रहे थे उसी के सहयोग से कुछ लोग लेकर गुरु चरणों में पहुंचे। गुरु भी तो कोई साधारण गुरु नहीं थे। लोंग लेने से मना कर दिया.' किन्तु गुरु जी मेरे पास तो इसके अतिरिक्त देने के लिये और कुछ है ही नहीं'। उत्तर मिला दयानंद जो मैं चाहता हूँ वह तो तेरे पास देने के लिए है। सर्वस्व अर्पण है गुरु जी। आप आदेश कीजिए।
- तो ठीक है अपना जीवन मुझे दे दो। जो ज्ञान मैंने तुम्हे दिया है उसका प्रचार-प्रसार करो। हजारों वर्षों की पराधीनता से ग्रस्त और पदाक्रांत व पद दलित भारत की आत्मा को जागृत करो। भारत माता तुम्हे बुला रही है।
- शिष्य वचन बद्ध था। जो वचन दिया था उसे जीवन पर्यन्त निभाया। कितने कष्ट सहे, ईंटे और पत्थर खाए, अपमान सहा, 17 बार विष पान किया। पुराणों के अनुसार शिव ने समुद्र मंथन के पश्चात् एक बार ही विष पान किया था। कितु मेरे मूल शंकर ने तो 17-17 बार विष पान किया इस संसार का उपकार करने के लिए। पूरी मानवता को वेद मार्ग पर चला कर वेद के उपदेश 'कृण्वन्तो विश-आर्यम्'को यथार्थ करने के लिए। वह चाहते तो अपने लिए मोक्ष की साधना कर के मुक्त हो सकते थे। किन्तु गुरु को दिए वचन के प्रति सजग थे।
- स्वामी दयानंद सरस्वती ने करीब 17-20 वर्षों तक (1864-1883) वैदिक धर्म का प्रचार किया। देहत्याग के नौ वर्ष पूर्व-1875 में लेखनी उठाई और सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि, पाखंड खंडन, पंच महायज्ञ, प्रतिमा पूजन विचार, यजुर्वेद सम्पूर्ण, ऋग्वेद का तीन चैथाई भाग तथा ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका लिख कर समाज को उपयुक्त किया। अपने जीवन में 150 से अधिक शास्त्रार्थ किए। सभी शास्त्रार्थों में विजयी भी रहे। प्रचार में 15000 मील (24 हज़ार किलोमीटर) से अधिक की यात्रा की। तीन हजार से अधिक व्याख्यान दिए। उन्होंने तीन हजार ग्रंथों को प्रमाणिक माना है। अंदाज़ा लगाइए तीन हज़ार को प्रमाणिक मानने के लिए पढ़े कितने ग्रन्थ होंगे।
- शिवरात्रि के दिन लोग उस एक बार विष पान करने वाले शंकर की उपासना तो करते है वह शंकर तो पुराण का काल्पनिक पात्र है। किन्तु मेरा मूलशंकर तो अभी कल का है वास्तविक शंकर है। आइये (बोधोत्सव) ऋषि पर्व मनाते हुए हम इस वास्तविक मूल शंकर को याद करे। याद करे उसके दिए हुवे उपदेश को ऋषि ने कहा था वेद का पढना, पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। 'आइये विचार करे हम कहाँ है।

- 207, दयानन्द विहार, दिल्ली-110092

समाचार दर्पण

बोधोत्सव के अवसर पर महात्मा चैतन्यस्वामी सम्मानित

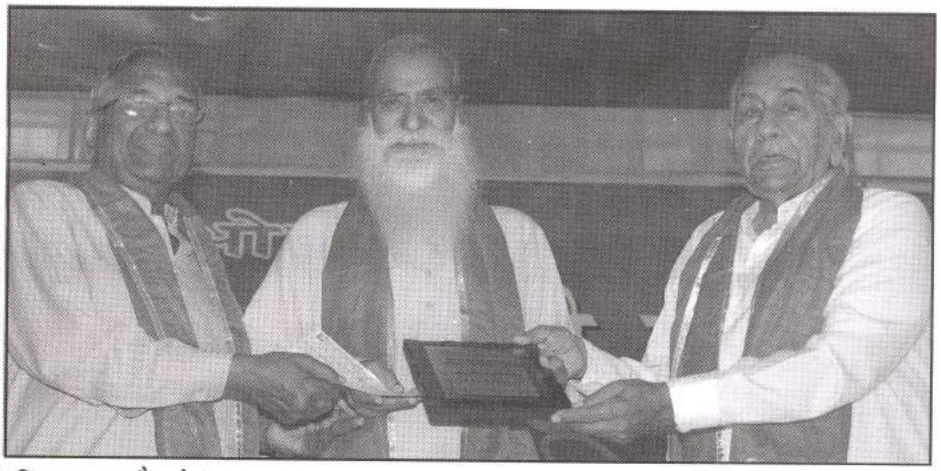

4 मार्च, 2019 को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के बोधोत्सव के अवसर पर आर्यजगत् की विभूति, चिन्तक, लेखक एवं प्रबुद्ध वक्ता आर्यश्रेष्ठी महात्मा चैतन्य स्वामीजी को उनके द्वारा वैदिक धर्म एवं सामाजिक क्षेत्र में किए गए अनेक महत्वपूर्ण कार्यों के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की पुण्य जन्मभूमि टंकारा में 'स्वामी संकल्पानन्द स्मृति सम्मान' से सम्मानित किया गया। उल्लेखनीय है कि महात्माजी ने हिमाचल प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा में उच्च पदों पर रहकर अनेक ही महत्वपूर्ण कार्य किए हैं। हिन्दी भाषा के लिए तथा साक्षरता अभियान में भी इनकी अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका रही है तथा इन्हें इन कार्यों के लिए सम्मानित भी किया गया है। ये एक लोकप्रिय वैदिक प्रवक्ता ही नहीं बल्कि प्रबुद्ध साहित्यकार भी हैं। अब तक इनकी लगभग पच्चहतर साहित्यिक एवं आध्यात्मिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। समालोचकों ने इनके कथा साहित्य की तुलना सुप्रसिद्ध उपन्यासकार मुंशी प्रेमचन्द के साथ की है। इनके काव्य के सम्बन्ध में समालोचकों का मानना है कि 'नागार्जुन का फक्कड़पन, त्रिलोचन का सौन्दर्य और अज्ञेय की चिन्तनशीलता चैतन्य के काव्य में एक साथ समाहित हैं'। स्वामीजी को साहित्य अकादमी सहित अब तक लगभग तीस पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। वैदिक प्रवक्ता के रूप में इन्हें सिद्धान्तवादी एवं लोकप्रिय वक्ता के रूप में समादृत किया जाता है। वर्तमान में स्वामीजी गुरू विरजानन्द गुरूकुल करतारपुर (जालन्धर, पंजाब) के संरक्षक हैं तथा आनन्दधाम आश्रम (उधमपुर) जम्मू कश्मीर ने इन्हें अपना मुख्य संरक्षक एवं निदेशक मनोनीत किया हुआ है। इसके अतिरिक्त ये उत्कर्ष कलाकेन्द्र (रजि.) के संस्थापक अध्यक्ष भी हैं।

उन्हें यह सम्मान आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई की ओर से टंकारा ट्रस्ट द्वारा आयोजित भव्य कार्यक्रम में दिया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य, डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री समिति के उपप्रधान डा. रमेश आर्य, पतञ्जलि विश्वविद्यालय के कुलपति डा. महावीर अग्रवाल, आचार्य इन्द्रदेव, श्री योगेश मुजांल, श्री सुधीर मुंजाल, श्रीलधाभाई पटेल, स्वामी शान्तानन्द, टंकारा को भव्य एवं दर्शनीय रूप देने वाले श्री अजय सहगल एवं श्री हसंमुख परमार आदि अनेक गणमान्य व्यक्ति समुपस्थित थे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज का 195वां जन्मदिवस सम्पन्न

आर्य समाज डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल सैक्टर-14, फरीदाबाद में आर्य समाज के प्रवर्तक, वेदोद्धारक, आदित्य ब्रह्मचारी महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज का 195वां जन्मदिवस हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य वक्ता प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं. राजेश कुमार शास्त्री थे। उन्होंने ऋषि भक्ति से ओतप्रोत भजनों द्वारा उपस्थित श्रोताओं को ऋषि राज दयानन्द के प्रति भावविभोर कर दिया। सभी श्रोता उनके भजनों पर झूम उठे। अन्त में विद्यालय की प्राचार्या व प्रधाना श्रीमती प्रिं. अनीता गौतम ने ऋषि दयानन्द के नारी जागरण के क्षेत्र में किए गए कार्यों को श्रद्धापूर्वक स्मरण किया साथ ही डी.ए.वी. की शिक्षा के क्षेत्र में की जा रही सेवा का उल्लेख करके उसके विशाल कार्य से सबको अवगत कराया एवं वक्ता का धन्यवाद किया। अन्त में सभी को शान्ति पाठ के साथ प्रसाद वितरण किया गया।

सब कुछ खोने के बाद भी अगर हमारे पास हौसला है तो समझ लीजिए आपने कुछ नहीं खोया

शोक समाचार

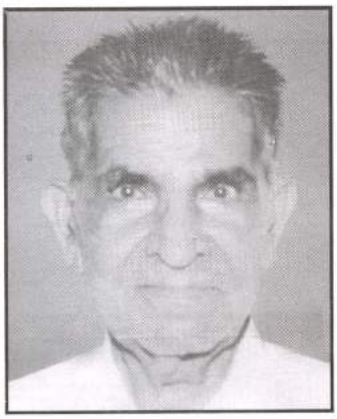

आर्यसमाज टंकारा के प्रधान श्री अमृतलाल बुद्धदेव जी का 89वर्ष की आयु में दिनांक 17 जनवरी को देहांत हो गया। उनका पूरा जीवन आर्यसमाज के लिए समर्पित था। वह गरीब व बेसहारा लोगों के लिए हमेशा अपनी उदारता परिचय देते रहें। टंकारा ट्रस्ट को भी हमेंशा सहयोग करते रहे। उनका अंतिम संस्कार पूर्ण वैदिक विधि से आचार्य रामदेव जी ने कराई।

मंगलमय नूतन वर्ष हो!

-महात्मा चैतन्यस्वामी

सुन्दर समुज्वल उत्कर्ष हो। मंगलमय नूतन वर्ष हो।।
हृदय विस्तृत व्योम सम, मस्तिष्क सरस सोम सम।
बुद्धि विकसित प्रबोध हो, नि:सृत चंहुदिश हर्ष हो।
अदृश्य दुरित समस्त हों, कलुषित दुर्ग ध्वस्त हों।
भद्रताओं के उज्जास का, भूतल को दिव्य स्पर्श हो।
छवि मानवता की गहन, दानवता का शिविर दहन।
अभ्युदय हो मातृ भू का, ऊँचा भाल अहर्निष हो।
एकता मूल-मन्त्र सृजित, उपवन का हर पुष्प मुदित।
'जीओ और जीने दो' तले, कहीं न कोई संघर्ष हो।
मंगलमय नूतन वर्ष हो।।

-महादेव, सुन्दरनगर-175018 (हि.प्र), मो. 9418053092

गौ-दान : महा-दान

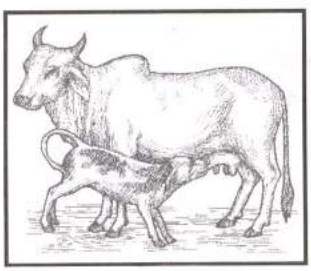

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय किया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से **20,000/-** रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा**, के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

(पृष्ठ 9 का शेष)

दिया जाता है।

श्री डॉ. रमेश आर्य जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि मैं इस टंकारा ऋषि जन्मभूमि की मिट्टी को नमन कर कृतार्थ हुआ हूं। आर्य समाज से मेरा परिचय अधिक नहीं था लेक्मि दादा एवम् पिता से मिले संस्कारों के अनुसार प्रतिदिन यज्ञ अवश्य करता रहा हूं। चिकित्सक होने के नाते भारत सरकार 27 वर्षो तक अमेरिका, कनाडा एवम् आस्ट्रलिया में शोध कार्य हेतु भेजते रहे और वहां भी मेरी दिनचर्या का एक भाग यज्ञ को समर्पित था। लेकिन जबसे डॉ. पूनम सूरी प्रधान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवम् प्रधान डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री समिति नई दिल्ली के नेतृत्व में उपप्रधान डी.ए.वी. के माध्यम से अपनी सेवाएं देना प्रारम्भ किया तो अनुभव किया कि आर्य समाज कितनी उन्नति कर चुका है। लाखों की संख्या में पूरे विश्व में आर्य समाज की शाखाएं हैं और कितने ही गुरुकुल वैदिक मान्यताओं को युवाओं में पल्लावित कर रहे हैं। और इस जन्मभूमि पर गुरुकुल को देख मन यहां दुबारा आने को कर रहा है ताकि इन ब्रह्मचारियों की दिनचर्या में रहकर आश्रम व्यवस्था के आनन्द को प्राप्त करूं। इस अवसर पर उन्होंने पॉच लाख का चैक टंकारा कार्यो के लिये आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की ओर से टंकारा ट्रस्ट को भेंट किया जिसका पधारे हुए आर्य जनों ने करतल ध्वनि से उनका स्वागत किया। श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि टंकारा ट्रस्ट द्वारा चलाए जा रहे गुरुकुल, उपदेशक विद्यालय निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर है और आज विश्व में कई आर्य समाजों में गया तो वहां के प्रोहित/वेद प्रवक्ता टंकारा से ही शिक्षित है लेकिन आज आवश्यकता है कि बाहुभाषी वेदों के विद्वान तैयार किए जाए। जहां टंकारा ट्रस्ट को इसकी प्रेरणा दे रहा हूं वहीं सार्वदेशिक सभा द्वारा शीघ्र ही पंचकूला में एक वृहद उपदेशक प्रशिक्षण केन्द्र बनाया जा रहा है जिसमें अलग-अलग भाषाओं वेद प्रचार करने वाले युवकों को तैयार किया जाएगा। इसी सत्र में टंकारा समाचार का विशेषांक ''बोधांक'' का भी विमोचन उपस्थित मंचासीन महानुभावों द्वारा किया गया।

रात्रि सत्र में श्रद्धांजलि सभा श्री योगेश मुंजाल जी की अध्यक्षता में आरम्भ हुई जिसमें श्री जगत वर्मा द्वारा स्वामी जी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की गई और इसके अतिरिक्त पधारे हुए आर्य जनों ने स्वामी दयानन्द के प्रति अपनी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

रामनाथ सहगल जी के 95वें जन्मदिवस पर आयोजित कार्यक्रमों की चित्रमय झलकियां

आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली

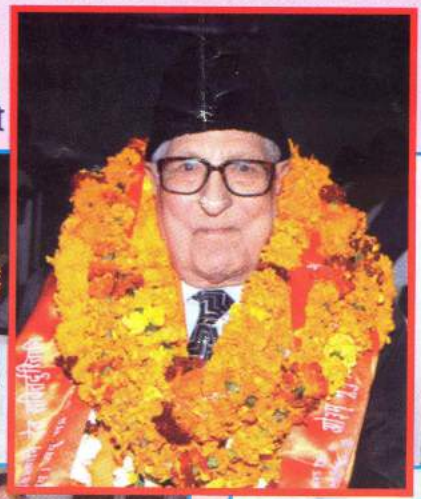

डी.ए.वी. मुख्यालय नई दिल्ली

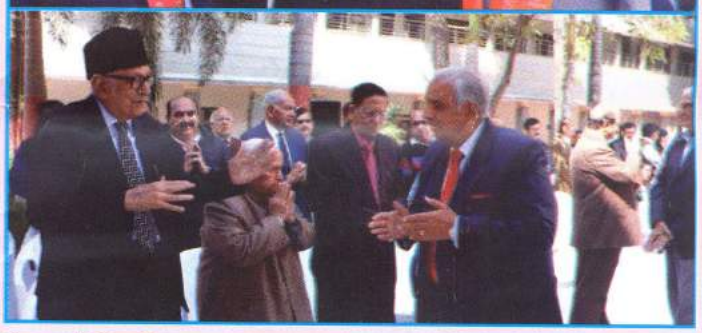

आर्य समाज डिफेन्स कॉलोनी, नई दिल्ली-११००२४

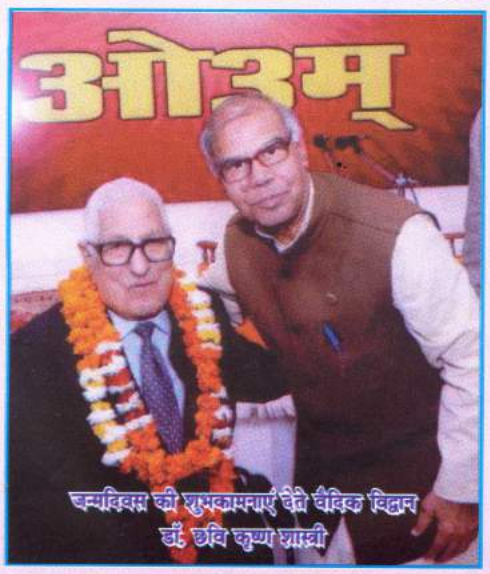

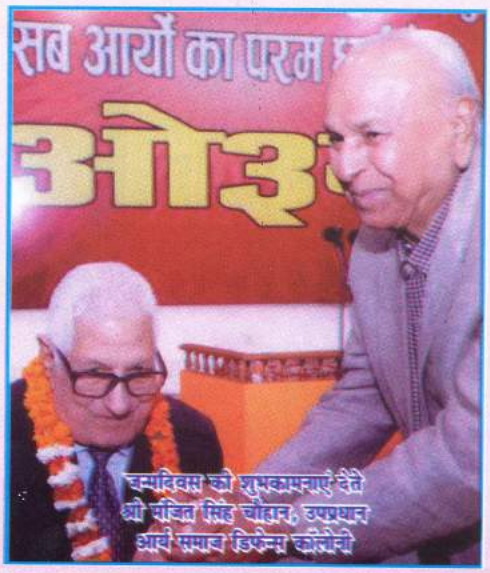

दुनिया में केवल पिता ही एक
ऐसा इंसान है जो चाहता है कि
मेरे बच्चे मुझसे ज्यादा कामयाब हो।

टंकारा समाचार अप्रैल 2019
Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2018-19-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं0 U(C) 231/2018-20
Posted at Patrika Channel, Delhi R.M.S. on 1/2-04-2019
R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथि: 23.03.2019

विश्व विख्यात MDH मसालों के निर्माता
महाशय धर्मपाल जी
चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड को
पद्म भूषण सम्मान
से अलंकृत किये जाने पर भारत के
माननीय राष्ट्रपति जी
का हार्दिक आभार

अधिकारी एवं सदस्यगण MDH

• महाशियाँ दी हट्टी प्रा० लिमिटेड (नई दिल्ली, गुड़गांव, फरीदाबाद, कुण्डली (हरियाणा), नागौर, राजस्थान)
• माता चन्नन देवी अस्पताल, जनकपुरी, नई दिल्ली • एम.डी.एच इंटरनैशनल स्कूल, जनकपुरी एवं द्वारका, नई दिल्ली
• सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा • दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा व आर्य केन्द्रीय सभा, नई दिल्ली एवं समस्त आर्य संस्थाएं

मुद्रक व प्रकाशक–रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-5 मोबाइल: 9810580474 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय